● **पढ़ो, समझो और दोहराओ :**

१२. सपूत

बहुत पुरानी बात है । फुलेरा नामक एक आदर्श गाँव था । गाँव में हर तरफ स्वच्छता थी । गाँव की गलियों में नियमित रूप से झाड़ू लगाई जाती थी । नालियाँ रोज साफ की जाती थीं । लिपाई-पुताई करके घर-आँगन सुंदर रखा जाता था । परिसर में बड़ी संख्या में पेड़-पौधे थे । कुएँ का पानी निर्मल रखने के लिए आवश्यक सावधानियाँ बरती जाती थीं । पनघट स्वच्छ और सुसज्जित था ।

एक दिन पनघट पर तीन स्त्रियाँ पानी भर रही थीं । वे अपने-अपने लाड़ले के गुणों का बखान कर रही थीं । एक बोली, ''बहन ! मेरा सपूत बड़ा विद्‌वान है । जब से शहर से पढ़कर आया है, चारों ओर उसकी धूम मची है । बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ लेता है । आकाश के तारों को देखकर उनके नाम बता देता है । देश-विदेश की सभी बातों का उसे पता है ।'' दूसरी ने जोश में झट से आगे बढ़कर कहा, ''अरी सखी ! मेरे लाल-जैसा बली तो दस-पाँच गाँवों में देखने को भी नहीं मिलेगा । पाँच सौ दंड-बैठक वह रोज सुबह लगाता है । अखाड़े में जब ताल ठोंककर उतर पड़ता है तो बड़े-बड़े पहलवान तक उसका मुकाबला करने से घबराते हैं । वह मेरा सपूत है ।''

अब तीसरी स्त्री की बारी थी पर वह चुप रही । इसपर उन दोनों ने कहा, ''बहन, तुम चुप क्यों हो ? लगता है तुम्हारा लड़का कपूत निकला ।'' तीसरी स्त्री बिना किसी जोश या

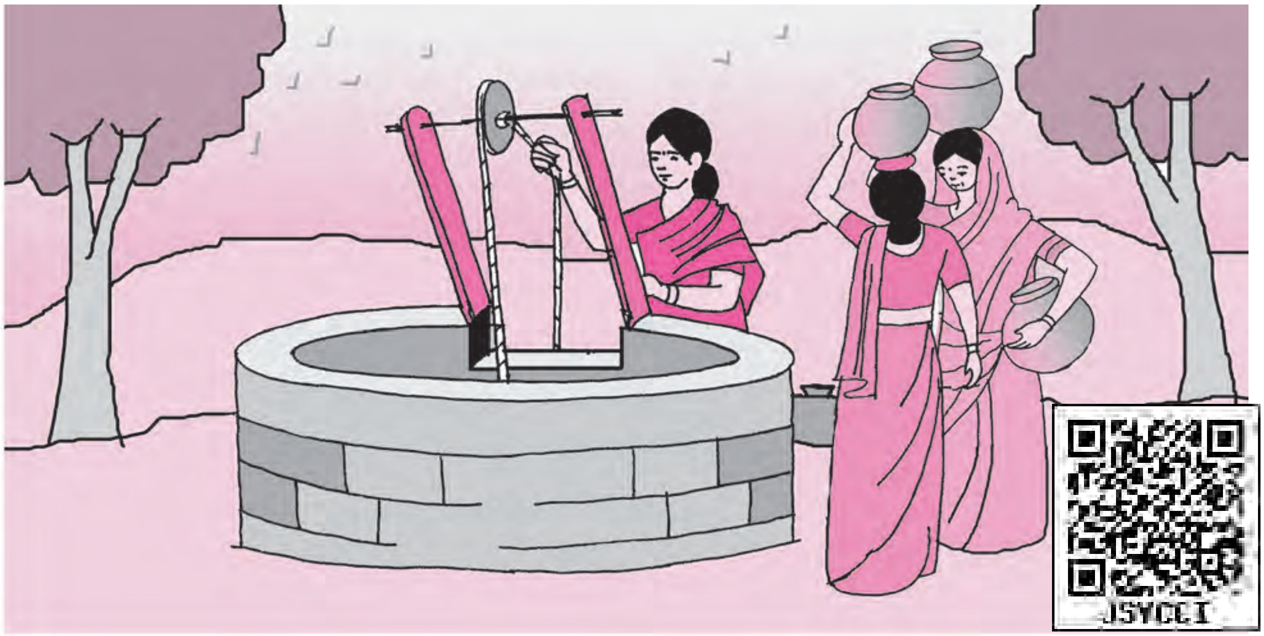

❑ समुचित आरोह-अवरोह और वाचिक अभिनय से कहानी का वाचन करें । सादगी, परिश्रम, मातृभक्ति और दायित्वबोध जैसे मूल्यों से संबंधित कहानियाँ उन्हें सुनाएँ । विद्यार्थियों को अन्य कोई कहानी सुनाने और उसपर चर्चा करने के लिए कहें ।

गर्व से बोली, ''बहनो ! सपूत या कपूत जैसे शब्द तो मैं नहीं समझती पर मेरा लाल मेरे लिए बहुत अच्छा है । वह सीधे-सादे स्वभाव का साधारण किसान है । दिन भर खेत में जुता रहता है । शाम को घर का काम करता है । आज बहुत कहने-सुनने पर वह मेला देखने गया है, इसीलिए मुझे पानी भरने आना पड़ा ।''

तीनों स्त्रियाँ अपने-अपने सिर पर घड़ा रखकर चल पड़ीं । अभी वे दो-चार कदम ही चली थीं कि पहली स्त्री का पुत्र आता हुआ दिखाई पड़ा । पास आते ही उसने अपनी माँ से कहा, ''व्याख्यान देने जा रहा हूँ । भोजन वहीं करूँगा ।'' यह कहकर वह तेजी से चला गया । तभी दूसरी स्त्री का पहलवान पुत्र भी आता हुआ दिखा । वह मतवाले हाथी की तरह झूम रहा था । उसने अपनी माँ से कहा, "माँ, आज दंगल में मैंने एक नामी पहलवान को बुरी तरह पछाड़ा । पानी लेकर जल्दी घर पहुँचना, मुझे जोरों की भूख लगी है ।" यह कहकर वह घर की ओर बढ़ गया ।

अंत में तीसरी स्त्री का पुत्र भी आ पहुँचा । वह बड़ा ही सीधा-सादा था । आते ही उसने अपने माँ के सिर से घड़ा उतारकर अपने सिर पर रख लिया और बोला, "माँ, तुम क्यों पानी भरने चली आईं ? मैं तो आ ही रहा था ।" माँ से घड़ा लेकर वह उत्साह के साथ घर की ओर चल पड़ा ।

यह देखकर अन्य दोनों स्त्रियों का सिर संकोच से झुक गया । उन्हें बोध हो गया था कि कर्तव्य और सेवा के बिना ज्ञान एवं बल अधूरे हैं । वे समझ गईं कि सपूत तो तीसरी स्त्री का बेटा ही है ।

- श्रीकृष्ण

१. तीनों स्त्रियों ने अपने-अपने बेटे की कौन-सी विशेषताएँ बताईं ?

२. अच्छे लड़के/ अच्छी लड़की में कौन-कौन-से गुण होने चाहिए, आपस में चर्चा करो ।

❑ कहानी तीन-चार बार पढ़वाएँ । मौन और मुखर वाचन करने के लिए कहें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के आशय पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को जीवन मूल्यों को व्यवहार में उतारने का महत्त्व समझाएँ । उनसे चर्चा द्वारा दृढ़ीकरण कराएँ ।